WITWAVES
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
Vol-2 Issue-3
(International Peer-Reviewed E-Journal)
(March 2025)

वर्तमान में कृषि और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था एक अध्ययन

डॉ. रामभरोसे शर्मा
प्राध्यापक

सार संक्षेप

भारतीय कृषि की वर्तमान स्थिति का विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है और पाया गया है कि पर्याप्त निवेश से समर्थित कृषि संबंधी नीतियों का उद्देश्य निश्चित रूप से विशेषकर नये क्षेत्रों में कृषि की पैदावार और उनके निर्यात में वृद्धि हुई है कृषि में भू-वितरण सम्बंधी असंतुलन दूर करने के लिए भूमि सुधार नीति का पुनर्निधारण करने के वास्ते निशेष कार्यक्रम तैयार किये जाने चाहिए व ऐसी समग्र कृषि नीतियों का निर्माण करना चाहिए जो भारतीय कृषि के सामने चुनौतियां है, उनका गहराई से विश्लेषण करते हुए सभी पहलुओं पर जोर दिया सके।

कुंजीशब्द

कृषि, समग्र नीतिया, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार रहा है और अब वर्तमान में भी है इसे सिर्फ सकल घरेलु उत्पादन में कृषि क्षेत्र के योगदान के रूप में ही नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि कृषि क्षेत्र की भूमिका के रूप में भी देखा चाहिए देश में कई महत्वपूर्ण उद्योग कृषि उपज पर निर्भर है जैसे की वस्तु उद्योग, चीनी उद्योग, या फिर लघु व ग्रामीण उद्योग, जिनके अन्तर्गत तेल मिले, चावल मिले, आटा मिले, और बेकरी आदि आते है। पिछले कई वर्षों में कृषि और कृषि से जुड़े क्षेत्रों का भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान उत्साह जनक रहा है, वर्तमान में केन्द्र सरकार द्वारा कृषि व कृषक को ध्यान में रखकर जो कार्य किये गये है, वह निश्चित रूप से कृषि व कृषक को मजबूती प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो रहे है। जिसके फलस्वरूप देश की खाद्यान आवश्यकता को पूरा करने में देश के समग्र प्रगति और विकास में महत्वपूर्ण योगदान कृषि का रहा है। यदि पिछले 5-6 वर्ष का आकलन हम करे तो इस दौरान भारतीय कृषि क्षेत्र 4.6 प्रतिशत की औसत

वार्षिक वृद्धि दर से वृद्धि कर रहा है, वर्तमान में हमारा देश तेजी से कृषि उत्पादों के शुद्ध निर्यातक के रूप में उभरा है, गत वर्षों की तुलना में 2022 -23 में भारत में कृषि और सहायक उत्पादों का निर्यात 18 प्रतिशत रहा है, इस दौरान कृषि निर्यात 50.2 विलियन अमेरिकी डॉलर के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुँच गया है। पिछले वर्षों में कोरोना महामारी के प्रलय से सेवा क्षेत्र एवं विनिर्माण क्षेत्र में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई थी, किन्तु कृषि ही एक ऐसा क्षेत्र था जिसने इस महामारी संकट के दौरान भी 23 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की सेवा क्षेत्र महामारी के समय सर्वाधिक प्रभावित रहा कृषि क्षेत्र पर कोई खास फर्क नहीं पड़ा इसीलिए यह निर्सिवाद सत्य है कि कृषि ही भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी के समान है जो इसे थामे रहती है। और समग्र विकास में प्रभावी सहयोग प्रदान करती है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. भारतीय कृषि की वर्तमन स्थिति का अध्ययन करना
2. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व को जानना
3. कृषि विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत करना

विधि तंत्र

इस शोध पत्र में यथा सम्भव प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको को सम्मिलित किया गया है इसके अतिरिक्त संदर्भित लेख, पुस्तकों को सहायक सम्मागी के रूप में प्रयाग किया है।

भारतीय कृषि एवं अर्थव्यवस्था

भारतीय कृषि का अध्ययन करने पर पता चलता है कि सन् 1991 के बाद जो आर्थिक सुधारों की नीति तय की गई थी उसमें कृषि क्षेत्र के लिए कोई उत्साह जनक बात नहीं थी। नई आर्थिक नीति का निर्धारण टुकड़ो-टुकड़ो में 6 माह की अवधि में किया गया और कृषि को छोडकर अर्थव्यवस्था के सभी पहलुओं को इसमें शामिल किया गया। कई उद्योगों को अनावश्यक नियमों और लाइसेंसों से हट, विनिमय दर सम्बंधी परिवर्तन जिसमें शुरू में रूपये का 18 प्रतिशत अवमूल्यन और कुछ समय तक दोहरी विनिमय दर जारी रखते हुए अंतत: भारतीय मुद्रा को पूर्व

परिवर्तनीय बनाकर एकीकृत दर कायम करना इसी प्रकार वित्तीय क्षेत्र में सुधार लाने की कई योजनाएं थी किन्तु कृषि क्षेत्र की कोई चर्चा नहीं की गई, जो अर्थव्यवस्था में विकास और रोजगार का प्रमुख क्षेत्र है।

कृषि की यह उपेक्षा देश की आजादी के प्रांरभिक वर्षों की याद दिलाती है। महालानोविश द्वारा प्रेरित और दिशा निर्देशित दूसरी पंचवार्षिय योजना में कृषि को दरकिनार करते हुए उद्योग पर बल देने की जो नीति स्थापित की गई थी, जो कई वर्षों तक लागू रही। कृषि की इस उपेक्षा का कुछ-कुछ विरोध भी होता रहा किंतु परिणामत: कोई परिवर्तनीय नीति कृषि हेतु नहीं लाई गई। वर्तमान केन्द्र सरकार द्वारा कृषि नीतियों एवं कृषक कल्याण से संबंधित कई नीतियों की शुरूआत की गई है। जिसके शुभ संकेत की एक धुधली तस्वीर नजर आने लगी है। सरकार कृषि को लेकर थोड़ा सर्तक नजर आ रही है जिससे यह आशा की सकती है कि कृषि नीतियों का यदि कड़ाई से पालन कराया जाये तो निश्चित रूप से कृषि की तस्वीर बदल सकती है सरकार द्वारा किसान संगठनो को बढावा देने फसल विविधि कारण को प्रोत्साहित करने और नवीन तकनीकी के लिऐ किये गये सुधार निश्चित रुप से कृषि अवसंरचना मे सुधार लाये है। कृषक कल्याण सम्बंधी कुछ नीतियों के लागू होने के पारिणाम स्वरूप कहा जा सकता है की किसानों की आय में वृद्धि हुई है। व उनके आय के स्त्रोंतों में विविधता आई है। जिससे प्राकृतिक आपदाओं से हुए नुकसान को सहन करने के प्रति उनकी सहनशीलता में सुधार हुआ है। कोविड-19 महामारी के बावजूद भी कृषि और सम्बंद्रध क्षेत्र में लोचदार वृद्धि प्राप्त हुई है। जबकि अन्य क्षेत्रो में ऋणात्मक विकास दर प्राप्त हुई है।

वर्तमान में भारत के कृषक समुदाय तथा भारतीय गांवो को लेकर सरकार सतर्क नजर आ रही है। जिसमे कृषि विकास हेतु तमाम रोजनाएं केन्द्र सरकार द्वारा चलाई गई है। पीएम किसान योजना यह भूमि धारक किसानो की वित्तीय जरूरतो को पूरा करने हेतु केन्द्र की योजना है। प्रति वर्ष लाभार्थी कृषको को डीवीडी के माध्यम से किसान के बैंक खाते में धनराशि भेज दी जाती है। यह विश्व की सबसे बडी डीबीडी योजना है। यह लगभग 10 करोड परिवारों को कबर करती है। अध्ययन में यह पाया गया है कि यह योजना कृषको के छोटे-छोटे कृषि

गतिबिधियों में उत्पादन,निवेश की दिशा में मदतगार साबित हो रही है। इसने कृषि उत्पादन में समग्र रूप से महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कृषि अवसंरचना निधि योजना- यह योजना कृषि अवसंरचना को वित्तपोषण सुबिधा उपलब्ध कराती है, जो वर्ष 2020-21 से 2032-33 तक की फसल कटाई के बाद प्रबंधनके बुनियादी ढांचे और समुदायिक कृषि सम्पत्ति निर्माण के लिए 3 प्रतिशत ब्याज में एवं क्रेडिट गारंटी समर्थन सहित चलायी जा रही है। इसके तहत वर्ष 2020-21 से 2025-26 की समय सीमा के लिए 1 लाख करोड़ भारी भरकम बजट का प्रावधान किया गया है। यह 2032-33 तक अनुदान की सहायता दी जायेगी यह कृषि क्षेत्र- की महत्वाकांक्षी योजना है जो आगे चलकर कृषि विकास हेतु मित्र का पत्थर सबित हो सकती है। इसकी शुरूआत के बाद देश में कृषि बुनियादी ढांचे के लिए 13.681 करोड़ की राशि स्वीकृत की गई है जिससे 18133 से अधिक योजनाएं शामिल है। इसमे 8,076 गोदाम, 2,788 प्राथमिक प्रसंस्करण इकाइयां 1860 कस्टम हायरिंग सेन्टर 937 छँटाई और ग्रेडिंग इकाइयां, 696 कोल्ड स्टोर परियोजनाएँ व अन्य योजनाएं कृषि के लिए शुरू की गई है।

भारत में कृषि का वर्तमान परिदृश्य

भारत एशिया के उन देशो में से है जहां कई शताब्दियों से कृषक समुदाय फलता फूलता रहा है। खेती बाडी पर आधारित इस व्यवस्था की अपनी अलग संस्कृति परंपरा बन गई। जिसके संयोग से अपनी पुर्ववर्ती विरासत के साथ विविधताओं से भरी बहुआयामी परंपराएं तथा रीति रिवाज विकसित हुए है। आज वर्तमान समय में भारत देश की कृषि ने भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। घरेलू खाद्यान आवश्यकताओं को पूरा करने के अतिरिक्त कृषि निर्यातों में भी बढोत्तरी हुई है। वित्व वर्ष 2022-23 में कृषि निर्यात 50 अरब डॉलर तक पहुचने के साथ 2024-25 में खरीफ व मोटे अनाज का उत्पादन 351 37 एलएम टी होने का अनुमान लगाया गया है। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा कृषि वर्ष 2023-24 हेतु 3235.54 लाख टन उत्पादन का अनुमान किया गया है। खाद्यान्न का उत्पादन प्रति वर्ष बढ रहा है। देश में गेंहू, चावल, गन्ना, कपास, जैसी फसलों में मुख्य उत्पादक देश के रूप में उभर रहा है।

भारत में पिछले तीन दशकों में हरित क्रान्ति तथा अनाज के मामले में आत्म निर्भता की प्राप्ति से देश में विज्ञान तथा टेक्नोलॉजी की सफलता की कहानी किसी से छिपी नही है। वास्तव में कृषि उत्पादन के क्षेत्र में अब तक की उपलब्धियों हमारी कृषि अनुशांधान प्रणाली की पूर्व क्षमताओं को प्रकट नही कर सकी है। कृषि कार्य में काम आने वाली आधुनिक वस्तुओं की उनकी मांग तथा नए तरीकों को जानने की कृषकों की इच्छा बढी है, जिसके फलस्वरूप गांवों में विज्ञान तथा टेक्नोलॉजी पर आधारित जो कृषि आज हमें दिखाई दे रही है, वह 30 वर्ष पहले की खेती बाडी से बहुत भिन्न है, हमारी कृषि अनुसान्धान प्रणाली तथा उसके प्रति किसानों की रचनात्मक प्रति क्रिया इन दोनो बातो को देखकर लगता है, कि हमारी कृषि का महत्व बढा है। और निकट भविष्य में कृषि क्षेत्र में तेजी से प्रगति होगी।

सुझाव एवं समाधान

प्रस्तुत अध्ययन से सह स्पष्ट हो गया है, कि आज भी वर्तमान में देश की कार्यशील जनसंख्या का प्रत्यक्ष रूप से 54.09 प्रतिशत शुद्रध् कृषि पर निर्भर है, तथा सकल घरेलू उत्पाद में 2023-24 की कीमतो पर कृषि का 15.6 प्रतिशत हिस्सा है। जहां एक ओर देश की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है, किन्तु दूसरी ओर कृषि में निवेश सकल घरेलू उत्पाद का मात्र 1.9 प्रितशत है,कृषि क्षेत्र के विकास हेतु दीर्घकालिक पूंजी की आवश्यकता है। अत: सार्वजनिक निवेश को प्रोत्साहित कर कृषि के साथ ही ग्रामीण बाजार, सडकों एवं विद्युति करण के समान रूप से विकास पर निवेश करना होगा।

1. कृषि हेतु पार्याप्त सार्वजनिक निवेश होना चाहिये।
2. सभी नीति निर्माता कृषि समुदाय संगठन तकनीकी विशेषज्ञ और कृषि अनुसंधानकर्ताओं को मिलकर काम करना चाहिए कृषि हेतु।
3. देश में सिंचाई सुविधाओं की क्षमता को बढ़ाना चाहिए। आधुनिक तकनीकि को कृषकों तक नि:शुल्क पहुचाना चाहिए।
4. कृषि उन्नत बीजों उर्वरकों की पर्याप्त मात्रा कृषकों को उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
5. भूमि सुधार हेतु उचित नीति का निर्माण करना चाहिए।

6. बहुफसली कृषि को अपनाना चाहिए। बागवनी कृषि को बढ़ावा देना चाहिए। कृषकों को सुलभ फसलों हेतु ऋण दिया जाना चाहिए।
7. समस्त कृषि कार्यों हेतु विद्युत व्यवस्था सरकार को निह: शुल्क देनी चाहिए।

निष्कर्ष

वर्तमान समय भूमंडली करण का वक्त है इसलिए देश के आर्थिक विकास में कृषि का विकास करना अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि भारत जैसे विकासशील देश के लिए कृषि में प्रगति के बिना समग्र विकास की कल्पना करना सम्भव नहीं है। वास्तव में भारत की अर्थव्यवस्था का मेरूदंड कही जाने वाली कृषि के विकास हेतु कृषि में सही दिशा में निवेश किया जाना अत्यन्त आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. आर्थिक समीक्षा 2022 -23 भारत सरकार वित्त मंत्रालय नई दिल्ली ।
2. भारतीय अर्थव्यवस्था 2020 मित्र एवं पुरी हिमालय पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली।
3. योजना- फरवरी प्रकाशन विभाग भारत सरका नई दिल्ली ।
4. दैनिक जागरण समाचार पत्र- कानपुर संस्करण।
5. कुरूक्षेत्र मार्च 2024 ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली।